नागार्जुन की कविता की दुनिया

नागार्जुन की कविता की दुनिया वैसी ही व्यापकता और विविधता से भरी हुई है जैसी व्यापकता और विविधता भारत देश में है और भारतीय समाज में। उनकी कविता की दुनिया में भारतवर्ष का विशाल भूगोल है जो उत्तर के हिमालय से लेकर दक्षिण के केरल तक फैला हुआ है और पूरब के मिजोरम से पश्चिम के गुजरात तक। उन्होंने हिमालय के उदात्त सौन्दर्य पर अनेक कविताएँ लिखी हैं। केरल के महाकवि वल्लतोल पर भी उनकी एक कविता है। देश के पूरब में स्थित मिजोरम पर उनकी एक कविता संस्कृत में है तो गुजरात से जुड़ी उनकी अनेक कविताएँ हिन्दी में हैं।

नागार्जुन की कविता की दुनिया में भारत की व्यापकता और विविधता ही नहीं है, यहाँ की प्रकृति के विभिन्न रूपों के मोहक और चकित करने वाले सौन्दर्य के असंख्य चित्र हैं। साथ ही भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों की पहचान और अभिव्यक्ति भी है। नागार्जुन की समग्रतावादी काव्य दृष्टि केवल भारत की प्रकृति के सौन्दर्य और संस्कृति की बहुलता तक सीमित नहीं है, वह भारतीय समाज और संस्कृति में मौजूद विकृतियों को भी पहचानती है और उनकी तीखी आलोचना भी करती है। नागार्जुन कविता को मनुष्यता की मातृभाषा मानते हैं, इसलिए उनकी कविता मनुष्यता की रक्षा के लिए लड़ने वाले मनुष्य की भाषा बोलने वाली कविता है।

नागार्जुन मुख्यतः राजनीतिक कवि माने जाते हैं। उन्होंने भारत और दुनिया के राजनीतिक व्यक्तियों पर जितनी कविताएँ लिखी हैं उतनी शायद ही किसी अन्य कवि ने लिखी हों। उन कविताओं के आधार पर आजादी के बाद की भारतीय राजनीति की वास्तविकताओं, विडम्बनाओं और विरूपताओं का इतिहास लिखा जा सकता है। नागार्जुन की वे राजनीतिक कविताएँ विशेषरूप से महत्त्वपूर्ण हैं जो जन आन्दोलनों पर हैं। उनमें नागार्जुन की जनोन्मुखी राजनीतिक दृष्टि और जनजीवन की बेहतरी के लिए अटूट प्रतिबद्धता व्यक्त हुई है। उनकी एक कविता है 'वह कौन था।' यह कविता 1948 की है, तेलंगाना आन्दोलन से सम्बद्ध। इस कविता में उस आन्दोलन के प्रति नागार्जुन की दृष्टि इन शब्दों में व्यक्त हुई है :

Scanned with CamScanner

आज बन्धन-मोक्ष के त्योहार का आरम्भ होता है
'उपद्रव', 'उत्पात' कहकर कुबेरों का वर्ग रोता है
कर-चरण-मन-प्राण फन्दों में फँसे थे–
दिशा थी अवरुद्ध, दृग पथरा रहे थे–
सर्वहारा ने निकाला है स्वयं ही मुक्ति का यह मार्ग।

नागार्जुन की कविता में तेलंगाना आन्दोलन के समय जो राजनीतिक दृष्टि व्यक्त हुई थी वह फिर नक्सलवाड़ी आन्दोलन से जुड़ी कविताओं में प्रकट हुई है। उन्होंने नक्सलवाड़ी आन्दोलन से उपजे संघर्षों पर अनेक कविताएँ लिखी हैं। उन कविताओं में विशेष महत्त्वपूर्ण है 'भोजपुर', जो 1981 की है। नागार्जुन भारतीय जनता की 'महामुक्ति' के प्रत्येक आन्दोलन का कविता में अभिनन्दन करते हैं।

नागार्जुन केवल किसानों और मजदूरों के आन्दोलनों के कवि नहीं हैं। उनकी कविता में छात्र आन्दोलन का भी चित्रण है। 1955 में बिहार में छात्रों का एक बड़ा आन्दोलन हुआ था, जिसका केन्द्र पटना था। उस आन्दोलन के दौरान पुलिस की गोली से अनेक छात्र मारे गये थे। सरकार और पुलिस की दमनकारी कार्रवाई से क्षुब्ध नागार्जुन ने उस समय अनेक कविताएँ लिखी थीं, जो 'खून और शोले' नाम की पुस्तिका में छपी थी। इन कविताओं में एक ओर आन्दोलनकारी छात्रों के साथ कवि की गहरी सहानुभूति है तो दूसरी ओर आन्दोलन का दमन करने वाली सरकार की प्रखर आलोचना। वैसे भारत में 1947 से जो लोकतन्त्र है उसकी जैसी आलोचना नागार्जुन ने की है वैसी आलोचना हिन्दी के किसी अन्य कवि की कविता में शायद ही मिले।

नागार्जुन जन-आन्दोलन पर कविता लिखते समय अत्यन्त भावावेग के क्षणों में भी कविता के रूप और सौन्दर्य का ध्यान रखते हैं। कविता की कला के प्रति उनकी यही सजगता उनकी कविता को लोकप्रिय बनाती है। 1955 के छात्र आन्दोलन के दौरान बिहार के एक छोटे से शहर नवादा में पुलिस की गोली से दो छात्र मारे गये। जिस सड़क पर वे दोनों मारे गये उसका चित्र यह है :

पीच रोड पर
धूसर दाग लहू के देख
बेदम बूढ़े हाथी की खुरदरी पीठ पर
मसल गया हो कोई ज्यों सूखा-सूखा सिन्दूर।
गोली लगी
गिरा धरती पर
यहीं महेन्दर
वासुदेव भी यहीं गिरा था

Scanned with CamScanner

हुए अनेकों घायल
बना कर्बला ट्रांसपोर्ट का अड्डा!

नागार्जुन की राजनीतिक चेतना जितनी प्रखर है उतनी ही मूलगामी है उनकी सामाजिक चेतना। उनकी कविता में भारतीय समाज के तीन निम्न वर्गीय समुदायों की पराधीनता के यथार्थ और स्वाधीनता की आकांक्षा के द्वन्द्व से संचालित जीवन-संघर्ष की विभिन्न स्थितियों की व्यंजना है। वे तीन समुदाय हैं—आदिवासी, दलित और स्त्रियाँ। भारत के आदिवासी मुख्यधारा के समाज के लिए पूरी तरह पराये हैं, वे सत्ता के लिए सजावट या शिकार की वस्तु हैं और संस्कृति के लिए असुर। यह स्थिति वैदिक काल से आज तक कायम है। नागार्जुन ने भारतीय समाज और सत्ता द्वारा सताये गये दूसरे समुदायों के साथ ही आदिवासियों से अपनी गहरी हमदर्दी व्यक्त की है। उनकी एक कविता है 'शालवनों के निविड़ टापू में।' यह कविता दन्तेवाड़ा के एक आदिवासी से सम्बन्धित है। इस कविता से जाहिर होता है कि आदिवासी समुदाय का मुख्य धारा के समाज और सत्ता से कोई आत्मीय सम्बन्ध नहीं है, बल्कि दोनों एक दूसरे के लिए अजनबी हैं। आदिवासियों के जीवन और संघर्ष से सम्बन्धित उनकी दूसरी कविता है 'दरख्तों की सघन बगीची में।' यह कविता 1979 की है पर आज भी वह उतनी ही सार्थक है जितनी तब थी। उसके अन्त की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

"सुनो नहीं
आलतू-फालतू बात
खाओ नहीं
डंडा-घूसा-लात
चौकस रहो
एक-एक दिन-रात
तभी तो भैया
जालिम खाएँगे मात..."

आदिवासियों की तरह ही दलित भारतीय समाज और सत्ता द्वारा सर्वाधिक सताया हुआ जनसमुदाय है। आज भी भारत में दलित पराधीनता की पीड़ा ही नहीं सहते, वे बार-बार उच्च वर्ण और उच्च वर्ग के प्राणघातक हमलों के भी शिकार होते हैं। ऐसी ही एक घटना से विक्षुब्ध होकर नागार्जुन ने 'हरिजन गाथा' नाम की एक लम्बी कविता लिखी है जिसमें दलितों की यातना के अनुभवों के चित्रण के साथ ही उनकी मुक्ति की सम्भावना की राह की ओर भी पर्याप्त संकेत हैं। नागार्जुन की यह कविता यूटोपिया के अन्त के समय में आशा के स्रोत के रूप में रची गयी एक नयी यूटोपिया की कविता है।

Scanned with CamScanner